इकाई 2 पृथ्वीराज रासो का काव्यत्व

इकाई की रूपरेखा

2.0 उद्देश्य
2.1 प्रस्तावना
2.2 विषय वस्तु
  2.2.1 कथानक
  2.2.2 युद्ध और शृंगार
  2.2.3 पात्र चित्रण
  2.2.4 प्रकृति वर्णन
2.3 काव्य कौशल
  2.3.1 छंद
  2.3.2 अनुनासिकता
  2.3.3 ध्वनि प्रवाह
2.4 सारांश
2.5 अभ्यास/प्रश्न

2.0 उद्देश्य

पिछली इकाई में **पृथ्वीराज रासो** की प्रामाणिकता, भाषा और काव्य रूप पर विचार किया जा चुका है। इस इकाई में **पृथ्वीराज रासो** के काव्यत्व पर विचार किया जा रहा है। इसे पढ़ने के बाद आपः

- **पृथ्वीराज रासो** की विषय वस्तु का मूल्यांकन कर सकेंगे
- रासोकार कवि चंद के काव्य कौशल का विवेचन कर सकेंगे।

2.1 प्रस्तावना

पिछली इकाई में हमने पृथ्वीराज रासो की प्रामाणिकता से जुड़े सवालों पर विचार विमर्श किया था। इस संदर्भ में पृथ्वीराज रासो की ऐतिहासिकता, रचनाकार, मूल पाठ, भाषा, काव्य रूप आदि पक्षों को आप समझ चुके होंगे।

जैसा कि आप जानते हैं पृथ्वीराज रासो के अनेक संस्करण प्राप्त होते हैं। यहाँ रासो के काव्य–सौंदर्य पर विचार करते समय दो पाठों को आधार बनाया जा रहा है- हजारी प्रसाद द्विवेदी द्वारा शुक-शुकी संवाद को ध्यान में रखकर निर्धारित पाठ तथा माता प्रसाद गुप्त द्वारा उक्ति-शृंखला एवं छंद-शृंखला के आधार पर निर्णीत पाठ।

इस इकाई में हमने सबसे पहले आपका परिचय पृथ्वीराज रासो की विषय वस्तु से कराया है। कथानक का परिचय देते हुए साथ-साथ उसका मूल्यांकन भी प्रस्तुत किया गया है। कथा विस्तार से प्रस्तुत नहीं की गई है संक्षेप में उसका उल्लेख कर दिया गया है। यदि आप पृथ्वीराज रासो की कथा और विस्तार से पढ़ना चाहते हैं तो आप डॉ. नामवर सिंह की पुस्तक "पृथ्वीराज रासो भाषा और साहित्य" परिशिष्ट पढ़िए। इस पुस्तक की पूरी जानकारी खंड के अंत में दी गई पुस्तकों की सूची में मिल जाएगी।

कथानक के अंतर्गत हमने 'कैमास वध' और 'कनवज्ज समय' का विशेष रूप से उल्लेख किया है और उनकी विशेषताओं की चर्चा की है। मार्मिकता की दृष्टि से कैमास वध प्रसंग महत्वपूर्ण है। कैमास प्रसंग को प्रामाणिक अंश भी माना जाता है क्योंकि इसी प्रसंग के छप्पय पुरातन प्रबंध संग्रह में प्राप्त हुए हैं।

'कनवज्ज समय' रासो का एक महत्वपूर्ण अंश है। इसमें जयचंद की कन्नौज यात्रा और संयोगिता के अपहरण की कथा आई है। इस प्रसंग में कवि ने शृंगार, युद्ध और यहाँ तक कि प्रकृति वर्णन का भी अवसर निकाल लिया है। 'कनवज्ज समय' को पाठ में भी शामिल किया गया है।

पृथ्वीराज रासो के शिल्प पर विचार न किया जाए तो बात अधूरी रह जाएगी। चंद को छंद का राजा कहा गया है। उन्होंने कविता में संस्कृत, प्राकृत तथा अपभ्रंश से चली आती छंद परंपरा को नई चाल में ढाला और हिंदी में छंद-संगीत का सूत्रपात किया। उनकी कविता में अनुनासिकता, ध्वनि-प्रवाह, लय सब मिलकर संगीत का निर्माण करते हैं। उनका अभिव्यक्ति कौशल अनूठा है।

आइए, इन पक्षों पर विस्तार से बातचीत की जाए।

2.2 विषय वस्तु

पृथ्वीराज रासो के काव्य-सौंदर्य पर विचार करने के लिए हमें एकाधिक पाठों को आधार बनाना पड़ेगा। **रासो** के मूल रूप पर विचार करते समय हमने दो पाठों का विशेष रूप से उल्लेख किया था - पं. हजारी प्रसाद द्विवेदी द्वारा शुक-शुकी के संवाद को ध्यान में रखकर निर्धारित पाठ और डॉ. माता प्रसाद गुप्त द्वारा उक्ति-शृंखला एवं छंद-शृंखला के आधार पर निर्णीत पाठ।

इसके बावजूद **पृथ्वीराज रासो** में जो प्रसंग सामान्य रूप से मिलते हैं वे इस प्रकार हैं :

1. आदि पर्व
2. दिल्ली किल्ली कथा
3. अनंगपाल दिल्ली दान
4. पंग यज्ञ विध्वंस
5. संयोगिता नेम आचरण
6. कैमास वध
7. षटऋतु वर्णन
8. कनवज्ज समय
9. बड़ी लड़ाई
10. बान बंध

इस इकाई में हम 'कैमास वध' और 'कनवज्ज समय' पर विशेष रूप से विचार करेंगे।
पृथ्वीराज रासो एक चरित काव्य है जिसका नायक पृथ्वीराज चौहान है। **पृथ्वीराज रासो** में अधिकांशतः पृथ्वीराज के विभिन्न विवाहों एवं युद्धों की ही कथा है। **आदि पर्व** में पृथ्वीराज के पूर्वजों, पृथ्वीराज के जन्म, बाल-लीला आदि का वर्णन है। **रासो** के अंतिम अंश में पृथ्वीराज द्वारा गोरी का, शब्दबेधी बाण द्वारा वध का वर्णन है। साथ ही पृथ्वीराज की भी मृत्यु हो गई।

2.2.1 कथानक

रासो का कथानक मध्यकाल में प्रचलित अनेक कथानक रूढ़ियों एवं काव्य रूढ़ियों से कसा हुआ है। कवि परंपरा से सुपरिचित है, उसका पालन करना और मौलिक उद्भावना द्वारा विकास करने की प्रतिभा से सम्पन्न है।

मध्यकालीन प्रबंध काव्यों के पात्र प्रायः सांचे में ढले होते हैं। वे अच्छे हैं तो अच्छे, बुरे हैं तो बुरे। इस स्थिति में रासोकार का चरित्र-चित्रण सुखद आश्चर्य का विषय है। पृथ्वीराज कोई सांचे-ढला पात्र नहीं, वह अच्छाइयों एवं कमजोरियों का पुंज है। आज की भाषा में कहें तो पृथ्वीराज यथार्थवादी पात्र है - बहुत दूर तक। निस्संदेह उसके चरित्र-निर्माण पर मध्यकालीन प्रबंध काव्यों के आदर्शवाद की भी छाप है।

पृथ्वीराज क्षत्रिय, सामन्त, वीर, रसिक, विलासी, दृढ़ प्रतिज्ञ, शरणागत-वत्सल और चन्द का अभिन्न मित्र है। उसे अपने गुणों एवं दुर्गुणों का फल इसी जीवन में मिल जाता है।

रासो में वर्णित घटनाओं की ऐतिहासिकता के विषय में चाहे जितना मतभेद हो, घटनाओं के उपस्थापन का शिल्प यथार्थ-परक है, कारण यह कि उसमें पृथ्वीराज के मन का द्वंद्व छिपाया नहीं गया है। उसे प्रकट कर दिया गया है। **रासो** के **आदि पर्व** में एक ऐसी घटना का वर्णन है जो पृथ्वीराज कालीन सामंती मूल्यों का मनोरंजक दस्तावेज़ मालूम पड़ता है। पृथ्वीराज के पराक्रमी चाचा कन्ह थे।

चालुक्यवंशी सात भाई पृथ्वीराज के दरबार में बैठे थे। पृथ्वीराज की उन पर कृपा थी। एक दिन भरे दरबार में उनमें से एक भाई प्रतापसी ने मूंछों पर हाथ फेर दिया:

परताप सि मुच्छन पान

यानी मूंछों पर ताव दे दिया। अपनी मूंछे ऐठ ली। उनका यह करना था कि कन्ह चाचा ने उसे मौत के घाट उतार दिया। उसे ही नहीं उसके भाइयों को भी। पृथ्वीराज धर्म-संकट में पड़ गए। जिसकी रक्षा का भार लिया था उन्हीं का वध किया गया। यह किसी और ने किया होता तो पृथ्वीराज उसे प्राण दंड देते। लेकिन कन्ह चाचा का क्या किया जाए। अंततोगत्वा विधान हुआ कि कन्ह चाचा की आंखों पर रत्न स्वर्णादि की पट्टी बांध दी गई। आंखों से पट्टी केवल दो अवसरों पर उतारी जाए - युद्ध क्षेत्र में और शय्या पर :

सो पट्टी निसि दिन रहै छोरि देइ द्वै ठाय
कै सिज्जा बामा रमत कै छुट्ट संग्राम

कवि ने पृथ्वीराज के चरित्र का जो चित्रण किया है वह उतना आदर्श-कल्पित नहीं है जितना कि यथार्थ परक। चन्द द्वारा पृथ्वीराज के चरित्र का चित्रण देखें तो वह सचमुच किसी निर्भीक सरस्वती के वरद-पुत्र का वर्णन प्रतीत होता है। यह भी कि चंद पृथ्वीराज का सच्चा मित्र एवं शुभ चिंतक है। इससे पृथ्वीराज के साथ-साथ चंदवरदाई के भी चरित्र का चित्रण हो गया है। दोनों मित्रों की मैत्री-परीक्षा का सबसे मार्मिक अवसर कैमास-वध में उपस्थित होता है। ध्यान देने की बात है कि कैमास-वध **पृथ्वीराज रासो** का सर्वाधिक प्रामाणिक अंश है। इसी प्रसंग के छप्पय पुरातन-प्रबंध-संग्रह में प्राप्त हुए हैं, यह हम **रासो** की प्रामाणिकता पर विचार करते समय देख चुके हैं।

कैमास (संस्कृत नाम कदम्बवास) पृथ्वीराज का प्रधानामात्य और सर्वाधिक विश्वस्त मंत्री था। पृथ्वीराज के बचपन में उनकी माँ ने उसी की देख-रेख में राजकाज चलाया था। पृथ्वीराज संयोगिता के विरह में स्थिर नहीं था। वह आखेट करता हुआ वन में घूम रहा था। शासन उसने कैमास को सौंप दिया था।

तिहि तप आखेटक भअइ थिर न रहइ चहुवान
वर प्रधान जुग्गुनि प्ररह घर रख्खइ परवान

इधर कैमास की बुद्धि धर्म-क्षीण हो गई। जो राजा की प्रतिमा (प्रतिनिधि) है उसका मन रमणियों में रम गया। उसके हाथ में तीर नहीं - वह वासना में शय्या गति को प्राप्त होने लगा।

राजं जा प्रतिभा सचीन धर्मा रामा रमे सा मतीन
नितीरे कर काम वाम बसना संगेन सिज्जा गतिः

कैमास कर्णाटी नाम की दासी पर अनुरक्त था। रात्रि में वह उसके महल में विहार कर रहा था। पृथ्वीराज को यह समाचार उनकी बड़ी रानी इंछिनी ने भिजवाया। पृथ्वीराज ने रात में ही आकर कैमास की हत्या कर दी। प्रातः भरे दरबार में अनजान बन कर पूछा - कैमास कहाँ है? किसी ने कोई उत्तर नहीं दिया। पृथ्वीराज ने चन्दवरदाई से पूछा। चन्दवरदाई ने उत्तर दिया - मैं पाताल और आकाश के बीच का सब रहस्य बता सकता हूँ। किंतु दाहिम (कैमास) दुर्लभ हो गया है, मुझसे कहा नहीं जाता। पृथ्वीराज ने चंद से कहा - तुम क्या आकाश-पाताल की बातें कर रहे हो यह तो बताओ कि कैमास कहाँ है या मुझे हरसिद्धि (देवी) का वर प्राप्त है यह कहना छोड़ दो। निकम्मे कवि काव्य रचना बंद कर दो-

कहा भजुंग कहा उदै सुर निकमु कब्ब कवि षंडु
कै कैमास बताइ मोहि कइ हरसिद्धी बर छंडु।

चंद ने सोचा पृथ्वीराज साँप के मुंह में उंगुली डाल रहा है अब मुझे सच बताना ही पडेगा। चंदवरदाई को स्वप्न में सरस्वती ने आकर सब बता दिया था। **चंद की काव्यधारा प्रवाहित हो उठी-**

एकु बान पुहुमी नरेस कयमासह मुक्कउ
उर उप्परि षर हरि उबीर कष्षन्तर चुक्कउ
बीउ बान संधानि हनउ सोमेसुर नंदन
गाडउ करि निग्गहउ षनिव खोदउ संभरि धनि
थर छंडि न जाइ अभाग रउ गारइ गहउ जु गुन षरउ
इमे जपइ चंद बिरद्दआ सु कहो निमद्दि हि इह प्रलउ।

चंद ने कैमास-वध का अन्तर्बाह्य विवरण देते हुए बताया - पृथ्वी नरेश तुमने एक बाण कैमास को मारा। वह उसके वक्ष पर खरहराता हुआ काँख से चूक गया (निकल गया) दूसरे बाण का संधान करके तुमने उसे मार डाला। शाकम्भरी नरेश पृथ्वीराज तुमने खन खोद कर गड्ढे में उसे डाल दिया। अब उस अभागे से वह थल छोड़ा नहीं जा रहा। उसे गुण रूपी पाषाण ने दृढ़ता से पकड़ रखा है। चंदवरदाई कहता है कि यह प्रलय कहाँ निपटेगा। तुम्हारे इस अकार्य का क्या फल होगा?

मध्यकालीन सामन्त निरंकुश होता था। पृथ्वीराज के एक इशारे पर चंद का क्या हो सकता था - यह सोचिए, तब अनुमान किया जा सकता है कि चंदवरदाई कितने निर्भीक सरस्वती-पुत्र थे। वे कवि की मर्यादा का निर्वाह कर सकते थे। चंदवरदाई का उत्तर सुनकर सभा में खलबली मच गई। अपने कानों से चंद का बयान सुनकर सभासद अपने घर भाग गए। पृथ्वीराज को रात भर नींद नहीं आयी। चंदवरदाई ने उस समय की सभा का जो वर्णन किया है वह मध्यकाल में दुर्लभ है। यथार्थपरकता और चंद की निर्भीकता दोनों का प्रमाण इस वर्णन में है-

राज-सभा में सम्भ्रम हुआ। उसे शांत करने के लिए प्रधान दरबान ने प्रवेश किया। सभी सामन्तों के सिर पर मानो लाठी लगी। केवल चंद बरद्अा स्थिर रहा। वह विमुख नहीं हुआ। मुख नहीं मोड़ा, पैर नहीं सरकाया। मुख क्रोध से यूं सूख रहा था मानों ग्रीष्म में सूर्य के तेज से जल रात के पति के जगते (चन्द्रमा के अस्त होने के पूर्व) घर-घर में यह बात फैल गई कि दाहिम (कैमास) को ऐसा दोष लगा है कि कलंक नहीं मिटेगा।

राजमज्झि संभयउ फट्ट दरबान परद्ठि
बहुर सब्ब सामंत मनउ लग्गिय सिरं लट्ठिय
रहयउ चंद बिरदिया विमुष मुख पग न सरक्यउ
गिम्ह तेज बर भट्ट रोस जल षिनि षिनि सुक्यउ
रत्तिरी कंत जग्गंत रइ चली घर घ्घरि बत्तरी
देहिमउ दोस लग्यउ षरउ मिटइ न कलि सु उत्तरी

चंद की निर्भीकता एवं चारित्र्य-दृढ़ता का प्रमाण **रासो** में तब मिलता है जब कैमास की पत्नी को वचन देकर वे पृथ्वीराज से कैमास का शव उसे देने को कहते हैं। कैमास की पत्नी सती होना चाहती थी और कैमास का शव केवल पृथ्वीराज ही उसे दे सकते थे। चंदवरदाई कुपित पृथ्वीराज के दरबार में पहुँचे। बोले- पृथ्वीराज! तुम्हारी कीर्ति के कमल को कैमास वध ने कवलित कर लिया है। तुम उसका शव दे दो। इसके बाद चंदवरदाई ने जो कुछ कहा वह द्रष्टव्य है-

रावण ने भी पराई स्त्री का हरण किया था। क्रुद्ध राम ने उसे बाण से मारा (किंतु उसका शव नहीं छिपाया था) इसी प्रकार बाली का सुग्रीव ने प्राण लिया। चंद्रमा ने गुरु पत्नी से रमण किया किंतु उसके शव को पृथ्वी में किसने गाड़ा। पांडु ने सूर्य को नहीं गाड़ा (कुंती के साथ रमण करने के अपराध में) सहदेव से पूछ लो। गौतम ने इन्द्र को नहीं गाड़ा। हाँ शाप अवश्य दिया। इस दोष पर इतना रोष करना (अनुचित) है। सुनो सामरधनी। (कैमास को) मत गाड़ो।

रावन किनि गड्डियउ क्रोध रघुराय बान दिनि
बालि किनि गड्डियउ सुत सुग्रीव जीव लिय
चंद किनि गड्डियउ कीय गुरुदार सो किल्लउ
रवि न पंउ गड्डियउ पुच्छ सहदेंव पहिल्लउ
गड्डियउ न इंदु गोतम रिषी बल सराप छंडिय जिनी
इह रोस दोस पृथिराज सुन मम गड्डिय सम्भर धनी

अन्ततोगत्वा पृथ्वीराज ने कैमास का शव कैमास की पत्नी को सौंप दिया। वह सती हुई। इस मनमुटाव के बाद पृथ्वीराज और चंदवरदाई गले मिले। इस मित्र-मिलन का जैसा मार्मिक चित्रण कवि ने किया है वह अनुपम है।

दोइ कंठ लग्गिय गहन नयनह जल गल न्हाम
(दोनों गहन भाव से कंठ लगे। नयनों के जल से भीग कर स्नान किया)

पृथ्वीराज की वीरता का चित्रण प्रायः युद्ध के प्रत्येक प्रसंग में हुआ है। पृथ्वीराज की वीरता सामंती नैतिकता से पुष्ट है। संयोगिता विवाह के अवसर पर कनउज्ज-युद्ध में विश्वस्त सेनापतियों ने पृथ्वीराज को संयोगिता सहित दिल्ली पहुँच जाने की राय दी। पृथ्वीराज जैसा शूरवीर इसे सहन नहीं कर सका। उसने अपने सेनापतियों को उत्तर दिया-

मुझे मरण का भय दिखा रहे हो। तुम्हारी बुद्धि नष्ट हो गई है। तुम जो मुझे मृत्यु का भय दिखा रहे हो क्या वह यम की चिट्ठी के बिना संभव है। तुमने भीम को हराया इसी का तुम्हें गर्व हो गया है। मैंने शहाबुद्दीन गोरी जैसे को हराया है। हिंदू और तुरूक दोनों मेरे शरणागत हैं उसे तुम शरणागत करना चाहते हो। तुम शूर-सामंत बूझ नहीं रहे हो। मेरे ऊपर इतना बड़ा बोझ मत रखो।

पृथ्वीराज की इस उक्ति में उसकी अकुतोभयता, दर्प, पराक्रम, औदात्य, शूर-सामंतों से आत्म भाव सब कुछ झलक रहा है। हिंदू-तुरूक दोनों मेरी शरण में हैं के कथन से शासक-योद्धा के रूप में हिंदू तुरक दोनों पर उसका समान भाव भी व्यंजित हो रहा है।

ऐसा कथन पृथ्वीराज चौहान के वीरत्व की प्रतिष्ठा करता है।

शूर-सामन्त होने के साथ पृथ्वीराज विलासी भी है। राजकुमारियों के सौंदर्य का वर्णन सुनकर वह पूर्व राग से विह्वल हो उठता है। वस्तुतः उसकी विलासिता ही उसके पराभव का - उसी के क्यों पूरी जाति के पराभव का कारण है। चंद ने पृथ्वीराज के दोषों को छिपाया नहीं है। कैमास-वध के प्रसंग में हम इसे देख चुके हैं। संयोगिता के साथ केलि-विलास के वर्णन में कवि ने स्पष्ट शब्दों में लिखा कि *संयोगिता की प्रौढ़ रति में निमग्न वह नहीं जान पाता था कि कब रात हुई कब दिन हुआ। गुरु, बंधुओं, भृत्यों, लोगों- सब की गति (राय) उसके विपरीत हो गई-*

अह निसि सुध्धि न जानहि माननि प्रौढ़ रति
गुरु बंधव, भृत, लोइ भई विपरीत गति

पृथ्वीराज-चंदवरदाई का साथ कृति में प्रायः सर्वत्र है। जब जब पृथ्वीराज पर कोई संकट पड़ता है या वह सन्मार्ग से विचलित होता है, चंदवरदाई उसे निर्भीक सलाह देता है, सच्चे शुभचिंतक मित्र की भांति। मध्यकाल के वातावरण में चन्दवरदाई का ऐसा दीप्त चरित्र अद्वितीय है। इस प्रसंग में सर्वाधिक मार्मिक एवं करुण स्थिति उस समय दिखलाई पड़ती है जब ग़जनी के कारागार में अंधे पृथ्वीराज की भेंट चंदवरदाई से होती है। डॉ. नामवर सिंह ने **रासो** के इस प्रसंग की मार्मिकता पर विचार करते हुए लिखा है-

... वह प्रसंग कितना मार्मिक है जब अंधा नरेश अपने प्रिय सहचर चंद का स्वर सुनता है। पहले वह पहचान नहीं पाता। फिर थोड़ी देर बाद स्वर के सहारे पहचान लेता है। उल्लास होता है, लेकिन फिर न जाने कितने भाव मन में उठते हैं। शायद यह कि आज इस विरुद के उपलक्ष्य में पहले की तरह पुरस्कार देने के लिए मेरे पास कुछ नहीं है। शायद यह कि आज यह विरुद व्यंग्य की तरह चुभता है, शायद यह कि अपना यह विपन्न रूप चंद को दिखाने के लिए मैं क्यों जीवित हूँ, शायद यह कि डूबते को तिनके का सहारा मिला और बहुत दिनों के बाद परदेश में स्वजन का स्वर सुनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। पृथ्वीराज कुछ नहीं बोलता; केवल -

नेहनीर रुकि कंठ कवि, नैन भाल झलझ्झल पानि।
बिन बोलत बोल्यो नृपति चंद चिंति बरबानि।।

(पृथ्वीराज रासो भाषा और साहित्य)

यहाँ 'बिन बोलत बोल्यो नृपति, वह सब कुछ कह देता है जो राजा के मन में है। पृथ्वीराज ही नहीं चंद के मन की व्यथा भी वह प्रकट कर देता है। अनुभूति की असीमता को शब्दों का अपव्यय नहीं मौन एवं शब्द संयम व्यंजित करता है। कबीर, तुलसी, सूर निराला की भाँति चंदवरदाई भी इसे जानते थे इसी-लिए सर्वाधिक मार्मिक प्रसंग में शब्दों का नहीं मौन का उपयोग किया-

बिन बोलत बोल्यो नृपति

कनवज्ज समय

रासो का एक महत्वपूर्ण अंश है **कनवज्ज-समय**। पृथ्वीराज चौहान और जयचंद में वैर था। कन्नौज जयचंद की राजधानी थी। जयचंद अपने समय में उत्तरी भारत का सम्भवतः सबसे बड़ा शासक था। उसकी उपाधि दल पंगुर थी। 'दल पंगुर' अर्थात ऐसा नरेश जिसकी सेना इतनी विशाल हो कि उसे प्रयाण न करना पड़े। जहाँ आक्रमण करना हो वहाँ तक सेना ही रहे, यानी जिसकी सेना चलती न हो, पंगु हो।

किंतु पृथ्वीराज किसी से नहीं दबता था। उसने सुना कि जयचंद ने राजसूय यज्ञ किया जिसमें उसने पृथ्वीराज की प्रतिमा यज्ञ-सभा के द्वार पर स्थापित कर दी। जयचंद की पुत्री संयोगिता ने पृथ्वीराज के रूप-पराक्रम की गाथा सुन रखी थी। उसने जयमाल पृथ्वीराज के गले में डाल दी। जयचंद ने यह सुना तो उसे क्रोध हुआ और उसने अनेक दासियों के साथ संयोगिता को गंगा तट पर स्थित एक महल में रहने की व्यवस्था करा दी।

पृथ्वीराज यह समाचार सुनकर अपमान से दग्ध हो उठा। साथ ही साथ उसके हृदय में संयोगिता के प्रति अनुराग का भाव भी अंकुरित हुआ। चंदवरदाई को साथ लेकर वह कन्नौज जाने के लिए उद्यत हुआ। यहाँ कवि ने कौशल से षड्ऋतु वर्णन का अवसर निकाल लिया है।

पृथ्वीराज एक एक करके अपनी रानियों से कन्नौज जाने की आज्ञा माँगता है। प्रत्येक रानी उसे एक ऋतु भर रोक लेती है। अनिवार्यतः यह संख्या छह होनी थी। क्योंकि ऋतुएँ छह ही होती हैं। पृथ्वीराज सबसे पहले बड़ी रानी इंछिनी के पास जाते हैं। इंछिनी क्या उत्तर दे। उत्तर और प्राण दोनों कंठ में एक साथ आ गए। कंठावरोध हो गया-

प्रान ज्वाब दोनों चलै आन अटवकै कंठ

ऋतु वसंत की थी। बड़ी रानी इंछिनी ने कहा आम की मंजरी आ गई है, कदम्ब फूले हैं, रातें दीर्घ हैं। भ्रमर मकरंद पान में मग्न भ्रमित होकर इधर उधर गुंजार रहे हैं। वायु बहती हुई विरहाग्नि का ताप दे रही है। कोकिल कुहू कुहू बोलकर रति की आग लगा रही है। हे नाथ! पैरों पड़ती हुई विनती करती हूँ। मेरे प्रति स्नेह का भाव धारण करो; यौवन का काल दिनों दिन घट रहा है, वसंत में गमन मत करो

मवरि अंब फुल्लिग कदंब रजनी दिघ दीसं।
भवर भाव भुल्ले भ्रमंत मकरंदय सीसं॥
बहत बात प्रज्जलति मौर अति विरह अगिन किय।
कुह कुहंत कल कंठ पत्र राषस रति अग्गिय॥
पय लग्गि प्रान पति बीनवौं नाह नेह मुझ चित धरहु।
दिन दिन अवद्धि जुटवन घटिय कंत वंसत गम करहु॥

इसी प्रकार उन्हें प्रत्येक रानी एक एक ऋतु में रोक लेती है। अब पृथ्वीराज गमन करें तो कैसे। कहीं भी जाएंगे कोई न कोई ऋतु तो होगी ही। ऐसे संकट से उन्हें चंदवरदाई ही उबार सकते थे। चंदवरदाई ने 'रितु' को ही इससे उबरने का रास्ता भी बना दिया। ऋतु शब्द का उपयोग स्त्रियों के मासिक धर्म की स्थिति के लिए भी होता है। चंद ने रास्ता सुझाया

रोष भरै उर कामिनी, होइ मलिन सिर अंग।
उहि रिति त्रिय न मावई सुनि चुहान चतुरंग॥

कहने की आवश्यकता नहीं कि प्रत्येक रानी से कन्नौज जाने की आज्ञा लेना षड्ऋतु वर्णन का बहाना है। कवि किसी न किसी छल से षड्ऋतु वर्णन की कथानक रूढ़ि का निर्वाह करना चाहते हैं।

रासो के अनुसार संवत् ग्यारह सौ एक्कानवे में चैत की तृतीया को रविवार के दिन पृथ्वीराज ने कन्नौज की ओर प्रयाण किया। रास्ते में कालिन्दी (यमुना) मिली। शुभ शकुन हुए। आगे चल कर गंगा पड़ती है। कवि गंगा की स्तुति त्रिभंगी छंद में करता है। प्रातः काल कन्नौज नगर दिखाई पड़ा। कवि को यहाँ उद्यान वर्णन एवं नगर वर्णन की कथानक रूढ़ि के पालन का अवसर मिलता है।

चंद पहले उद्यान का वर्णन करते हैं। उसमें नाम परिगणन भी है और अनूठा सादृश्य-विधान भी। उद्यान-वर्णन के उपरान्त नगर वर्णन है। कन्नौज में रत्नों, मोतियों, मणियों की दूकानें हैं। नाके-नाके पर तमोली हैं, पान खाकर थूकने से कीचड़ सा हो गया है। कवि कहता है कि नगर वर्णन करने लगूंगा तो बहुत देर हो जाएगी इसलिए जयचंद के द्वार चलें। पृथ्वीराज एवं चंद को हज़म (कोतवाल) मिलता है जो उन्हें दरबार में पहुंचाता है। जयचंद को देखकर चंद अपने हाथ उठाकर उन्हें आशीर्वाद देता है। इसके पश्चात जयचंद और कवि का संवाद मनोरंजक एवं विदग्धतापूर्ण है। जयचंद कवि चंद के बरदिया उपाधि पर श्लेष-व्यंग्य (बरदाई और बरध बैल) करता हुआ पूछता है-

मुह दरिद्र अरु तुच्छ तन जंगल राव सु हद।
बन उजार पसु तन चरन, क्यों दूबरो बरद॥

मुख मंडल से दारिद्रय टपकता है, शरीर क्षीण है जंगल की सीमा पर रोक है? वन उजड़ गया है पशु चर नहीं पाता। क्या कारण है कि बर्द (बैल - बरद्दिया) दुबला है?

चंद ने उत्तर दिया-

पृथ्वीराज ने दुष्ट शत्रुओं को पराजित किया। वे वन में पले, डाल, मूल, वृक्ष पकड़ कर छिप गए। अनेक दातों में तिनके दूब रखकर चौहान की शरण में गए। इससे पत्तों दूबों की कमी पड़ गई और वर्द दुबला हो गया- आदि

जयचंद ने पृथ्वीराज के विषय में प्रश्न किया - वह कैसा है, उसकी सेना कितनी बड़ी है। चंद ने पृथ्वीराज की उम्र बताई- बरस तीस छह अग्गरौ- छः वर्ष आगे तीस यानी छत्तीस। इसी बीच दरबार में एक नाटकीय घटना घटी। पृथ्वीराज की एक दासी जयचंद के यहाँ रहने लगी थी। वह केश खोले रहती थी। किंतु पृथ्वीराज को देखते ही उसने सिर ढांक लिया। जयचंद को शंका हुई कि यह व्यक्ति पृथ्वीराज तो नहीं है। लोग तरह तरह की बातें करने लगे। किसी ने कहा कि चंद को देखकर दासी ने सिर ढंका क्योंकि चंद पृथ्वीराज का अभिन्न है। चंद और पृथ्वीराज को एक सुसज्जित आवास में ठहराया गया। किंतु अन्ततोगत्वा पृथ्वीराज पहचान लिया जाता है और जयचंद पृथ्वीराज पर आक्रमण करने की आज्ञा देता है।

पृथ्वीराज और संयोगिता का मिलन इसी युद्ध की पृष्ठभूमि में होता है। पृथ्वीराज सामंतों से युद्ध क्षेत्र में जाने के लिए कहता है और स्वयं नगर देखने निकल पड़ता है। इधर जयचंद की सेना ने हाथियों घोड़ों सहित आक्रमण किया उधर पृथ्वीराज ने नगर घूमने का ध्यान किया और गंगा तट पर जा पहुँचा

इते सेन चढ़ि पंगबर है गै दिसा निसान
लच्छिन नैर नरिदं करि गंग सुपलौ ध्यान

पृथ्वीराज मछलियों को मोती चुगा रहा था। सखी ने झरोखे से देखा। उसने संयोगिता से बताया। संयोगिता पृथ्वीराज को देखकर विह्वल हो गई।

मदन ने उसे सरल व निरीह बना दिया। जिह्वा से प्राणेश को रटती है। नयनों से अश्रु प्रवाहित हो रहा है। वामा को कंत कैसे/किस प्रकार मिले?

मदनं सरलति विविहा जिव्हा रटयति प्रान प्रानेस।
नयन प्रवाहति विवहा अह वामा कंत कथ्थयं।।

संयोगिता पृथ्वीराज से गंगा तट पर ही मिलती है। पृथ्वीराज संयोगिता को घोड़े पर बिठाना चाहता है। तो उसे संकोच होता है भविष्य के प्रति नारी-सुलभ डर भी कि चौहान आजीवन (भीर परत) उसका साथ देगा? मैं पिता की सारी सेना के सामने घोड़े की पीठ पर कैसे बैठूं।

किम हय पुट्ठिहि आर हौं घटि दल संगह राज।
भीर परत जो तजि चल्यौ तब मो आवै लाज।।

संकट पड़ने पर जब पृथ्वीराज मुझे तज चलेगा तब मुझे इस से लज्जा आएगी सब के सामने। पृथ्वीराज ने समझाया- मन को अब भारी मत करो। मैं जयचंद की समस्त सेना का संहार कर दूँगा। सुंदरी तब तुम्हें घोड़े पर बैठते समय लज्जा नहीं आएगी।

तब हसि जंप्यो नृप बयन गहर न कीजिय अब्ब
सब्ब पंग दल संहरौ सुंदरि लाज न तब्ब

इसके बाद संयोगिता कुछ सोच समझ रही थी कि पृथ्वीराज ने उसे बांह से पकड़ कर घोड़े पर बिठा लिया। संयोगिता घोड़े पर पृथ्वीराज की पीठ से सट कर बैठ गई। मानों पूर्ण चंद्रमा सूर्य के साथ जुड़ कर बैठ गया हो-

हय संजोगि आरुहिय पुट्ठि लग्गी सो वाम नृप
पति राका पूरन प्रमान अरक बैठे सु सूर बिप

इसके बाद पृथ्वीराज और जयचंद की सेनाओं के बीच युद्ध का विशद वर्णन है। अंत में पृथ्वीराज संयोगिता को लेकर दिल्ली पहुंचते हैं जहाँ उनका विधिवत विवाह होता है। तदुपरान्त कवि उनके केलि-विलास का जमकर वर्णन करता है।

2.2.2 युद्ध और शृंगार

रासो में प्रायः युद्ध और शृंगार दोनों का वर्णन साथ-साथ होता है। इसी ढांचे में कहीं-कहीं कवि जीवन के यथार्थ एवं मार्मिक चित्र प्रस्तुत कर देता है। निस्संदेह चंद के काव्य-मूल्य सामंती हैं किंतु अपने देश काल को देखते हुए चंद मानवतावादी कवि हैं। उनकी निर्भीकता का परिचय हम 'कैमास-वध' के प्रकरण में पा चुके हैं। कैमास की पत्नी अपने पति का शव माँगने जब जाती है तब उसकी उक्तियों में निर्वेद का ऐसा औदात्य मिलता है जो अन्यत्र शायद ही कहीं मिले। वह कहती है कि जीवन ही सभी कार्यों और आन्तरबाह्य चेष्टाओं का आधार है। जिसे अपना जीवन मूल्यवान लगता है उसे नृपति के वचनों का बहुत भय रहता है। किंतु अब तो मेरे लिए सरोवर सूख गया, हंस अपने पंखों को समेट कर उड़ गया। अर्थात मेरे पति की मृत्यु हो जाने के बाद मेरे लिए जीवन निस्सार हो गया है अब मुझे प्राणों का क्या भय - अब मुझे पृथ्वीराज का कोई डर नहीं

जउ जीवन साई अप्पन उ नृपति बहुत बच्चनह भउ
सुक्क सरोवर हंस गउ सुकिलि उडड़ अंधार भउ

चंदवरदाई वीरता की अभिव्यक्ति केवल युद्ध-वर्णन में ही नहीं करते। वे वीरता को आन्तरिक गुण मानते हैं। संकट के समय जब शूर-सामन्त पृथ्वीराज को सकुशल दिल्ली चले जाने का आग्रह करते हैं तब चौहान उनसे कहता है कि मैंने ऐसा पाठ नहीं पढ़ा है। कन्ह चाचा की वीरता का चित्रण कवि इस बिम्ब के द्वारा देता है -

मुख छुट्ठत नृप बैन दिट्ठ दिष्यौ धावन्तं।

पृथ्वीराज के मुख से निकले हुए वचन सुनाई पड़ने के साथ ही आंखों ने शत्रु पर कन्ह को आक्रमण करने के लिए दौड़ते हुए देखा।

रासो का काव्योत्कर्ष शृंगार के क्षेत्र में वीरता से कम नहीं। चंद वयस्संधि वर्णन में परम निपुण हैं। यहाँ भी वे नायिका के शरीर का ही नहीं उसके मनोभावों का भी चित्रण करते हैं। चंद प्रायः ऐसा चित्रण-वर्णन करते हैं कि पात्र के शरीर और मन का चित्रण एक साथ हो जाता है। यह शृंगार वर्णन की दृष्टि से चंद की विशेषता है।

कवि ने शशिव्रता के कैशोर आगमन का चित्रण शिशिर में अचानक वसंत आ जाने के बिम्ब-रूपक से किया है-

पुराने पत्ते झड़ गए। कोमल अंकुर निकलने लगे। शैशव उतर रहा है और कैशोर चढ़ रहा है। शीतल मंद सुगंध वायु के साथ अचानक ऋतुराज आ गया। रोमराजि, कुच, नितम्ब कोमलता वृद्धि पा गए। शीत के समान कटि बढ़ती नहीं बल्कि निरंतर क्षीण हो रही है। पत शब्द का श्लेष करते हुए कवि कहता है- (पत - पत्ता और मर्यादा, लज्जा)

पत्ते ढंक नहीं पाते तने को, वह प्रयास करने पर भी शरीर को ढंक नहीं पाती। वसंत ने तन को मत्त जो कर रखा है, कैशोर ने शशिव्रता के मन को मतवाला कर दिया है:

पत्त पुरातन झरिग पत्त अंकुरिय उट्ठि तुछ।
ज्यों सैसव उत्तरिय चढ़िय बैसव किसोर कुछ।।
सीतल मंद सुगंध आइ रितुराज अचानं।
रोमराइ अंग कुच नितम्ब तुच्छ सरसानं।।
बढ़ढै न सीत कटि छीन ह्वै लज्जामान ढकत फिरै।
ढक्कह न पत्त ठकै-कहै वन बसंत मत्त जु करै।

पृथ्वीराज द्वारा संयोगिता को घोड़े पर चढ़ाते और संयोगिता के लजाने का भी कवि ने मार्मिक चित्रण किया है। इस प्रसंग पर टिप्पणी करते हुए डॉ. नामवर सिंह लिखते हैं, 'प्रणय का प्रस्फुटन कर्म क्षेत्र में ही होता है, जहाँ युगल हृदय एक-दूसरे को सहयोग देते हुए परस्पर श्रमसिक्त मुख देखते चलते हैं।'

2.2.3 पात्र चित्रण

चंद की विशेषता यह है कि वे पात्रों की दुविधा का चित्रण करना नहीं भूलते। चाहे वयस्संधि नायिका की दुविधा हो, चाहे पृथ्वीराज के साथ दिल्ली जाने के लिए घोड़े पर बैठती संयोगिता की दुविधा। माता-पिता का घर छोड़कर पृथ्वीराज से मिलने के लिए मंदिर जाने की तैयारी करती हुई शशिव्रता के मन का द्वंद्व द्रष्टव्य है।

देव (गुरुजन, माँ-बाप) को छोड़ने का दुःख और दूसरी तरफ हृदय में प्रेम-अंकुर का जन्म लेना, इस दुविधा से शशिव्रता ने अपने को यह कह कर सांत्वना दी कि काल बलवान है-

दुख देवल को छँउनइ उर सिंचन अंकूर
दीह काल बल बीच वदि लिय समान सपूर

इसी प्रकार कितना मनोवैज्ञानिक है कवि का यह चित्रण, पृथ्वीराज ने जब पहली बार शशिव्रता का हाथ पकड़ा तो-

गहत बाल पिय पानि सु गुर जन संभरे
लोचन मोचि सुरंग सु अंसु बहे खरे
अपमंगह जिय जानि सु नैन मुख बहीं
मनो खंजन मुख मुत्त मरक्कत नरंवही

जब प्रिय पृथ्वीराज ने बाला का हाथ पकड़ा तो उसने अपने गुरुजनों (माता-पिता, मायके के लोगों) का स्मरण किया। सुंदर नेत्रों से आँसू बहने लगे। लेकिन उसने इसे अशुभ समझकर रोका। कुछ आँसू आंखों के कोनों में लगे रहे (तुलनीय- लोचन जल रह लोचन कोना- तुलसी)।

चंद ने उपमा दीः

मानों खंजन मोती खा रहा हो कुछ मुंह में लगे हैं कुछ नीचे गिर रहे हैं।

2.2.4 प्रकृति वर्णन

कवि प्रकृति वर्णन में सिद्धहस्त है। कनवज्ज समय के षट्-ऋतु वर्णन से आप परिचित हो चुके हैं। यह षट्-ऋतु वर्णन आरोपित न होकर मानव कार्य व्यापार का अंग बनकर आया है। उनके प्रकृति-वर्णन में खास बात यह होती है कि वे प्रकृति का ऐसा चित्रण करते हैं कि उससे पात्रों की तत्कालीन मनःस्थिति का चित्रण हो जाता है। कैमास अंधेरी रात में कर्णाती के साथ केलि-विलास में निमग्न है। घोर अंधकार है, मूसलाधार वर्षा हो रही है। इस स्थिति के वर्णन में कवि के बिम्बों पर ध्यान दीजिए तो प्रकृति-वर्णन के साथ संयोग-शृंगार में मन और शरीर दोनों की चेष्टाओं की अकुंठ व्यंजना मिलेगी-

अंधारेन जलेन छिन्न छितया तारानि धारा रत।
सा मंत्री कयमास काम अंधा दैवो विचित्र गत।।

अंधकारपूर्ण रात में पृथ्वी घनघोर वर्षा से छिन्न-भिन्न विदीर्ण हो रही है। तारे भी मूसलाधार वर्षा में छिपे हैं। वह मंत्री कैमास कामांध है। दैव की गति विचित्र है। पृथ्वी का घनघोर वर्षा से विदीर्ण होना घोर शृंगार का संकेत है। वर्षा में तारे छिपे हैं। इधर कैमास भी कामांध है। जिसे आधुनिक आलोचना कविता में समानान्तरवाद (पैरेलेज्मि) कहती है यह उसका उत्कृष्ट उदाहरण है। इस वर्णन के बाद कवि मानो दृश्य से तटस्थ हो गया है और दार्शनिक टिप्पणी करता है- दैव की गति विचित्र है- - दैवो विचित्रा गति। पर्य्यावसान एक प्रकार के भाग्यवादी अवसाद में होता है। सा मंत्री कयमास काम-अंधा। ऐसा योग्य और कर्तव्यपरायण मंत्री विवेकहीन हो गया यह दैव-गति की विचित्रता नहीं तो और क्या है?

पृथ्वीराज रासो के दो प्रमुख प्रसंगों - कैमास वध और कनवज्ज समय - के विश्लेषण के माध्यम से हमने **पृथ्वीराज रासो** की विषय वस्तु, कथानक, पात्र चित्रण, प्रकृति वर्णन आदि कुछ महत्वपूर्ण विषयों की चर्चा की। इस चरित काव्य के केंद्र में **पृथ्वीराज रासो** है। उसी की कथा इस महाकाव्य के माध्यम से कही गई है। इस कथा में इतिहास का उल्लंघन हो गया हो तो कोई आश्चर्य की बात नहीं क्योंकि कवि मानवीय सत्यों का अन्वेषक होता है वह इतिहास नहीं लिख रहा होता। कवि चंद ने अपने चरितनायक का चित्रण करते वक्त उसकी कमजोरियों को छिपाया नहीं है। कैमास-वध प्रसंग में कवि की निर्भीकता द्रष्टव्य है।

कनवज्ज समय में अनेक मार्मिक प्रसंग आए हैं। कनवज्ज समय में वर्णित षट्-ऋतु वर्णन हिंदी साहित्य की अनुपम धरोहर है। कवि ने उस युग की समृद्ध नगरी कान्यकुब्ज के सौंदर्य का वर्णन विस्तार से किया है। इसमें कवि की उपमा शक्ति देखने लायक है। राजा जयचंद के राजदरबार में चंदबरदाई के साथ छद्म वेश में पृथ्वीराज के जाने की घटना भी नाटकीयता से भरपूर है। इसके बाद गंगा के किनारे संयोगिता और पृथ्वीराज का मिलन अद्भुत है। कवि भला कब चूकने वाला था!

चंदवरदाई की कल्पना शक्ति और मनोवैज्ञानिक स्थितियों के चित्रण की क्षमता का परिचय आपने प्राप्त कर लिया। आइए अब **पृथ्वीराज रासो** की भाषा पर विचार किया जाए।

2.3 काव्य कौशल

निस्संदेह चंदवरदाई एक कुशल कवि हैं। उनका काव्य कौशल इसका स्पष्ट प्रमाण है। भाषा पर उनका अधिकार असाधारण है। उन्होंने पहले से चली आ रही काव्य परंपरा को एक ऊँचाई प्रदान की।

कवि में भावों के अनुरूप भाषा को मोड़ने की अद्‌भुत क्षमता है। बाद में कबीर और तुलसी में यह क्षमता फिर से देखने को मिलती है। भावानुकूलता और तीव्र सौंदर्यात्मकता चंद की भाषा की प्रमुख विशेषता है।

2.3.1 छंद

चंदवरदाई छंद के राजा माने जाते हैं। जैसे-जैसे भाव बदलते जाते हैं वैसे-वैसे कवि छंद की राह बदलता चलता है और आरोह-अवरोह के साथ भाषा संगीतमय लय में गुनगुनाती हुई ठुमकती चलती है। इससे एक संगीत पैदा होता है। चंदवरदाई छंदों के अधिकारी कवि हैं। उन्होंने अपने समय में प्रचलित अधिकांश छंदों का प्रयोग किया है। सबसे ज्यादा मन लगता है छप्पयों में। चंद मार्मिक चित्रण छप्पयों में करते हैं। लेकिन इसका अर्थ यह नहीं कि वे अन्य छंदों में मार्मिक उक्तियाँ नहीं कहते। गाथा का उपयोग वे प्रायः कथा को आगे बढ़ाने के लिए करते हैं।

2.3.2 अनुनासिकता

रासो का कवि अनुनासिक प्रयोग से प्राय: झंकार उत्पन्न करता है। चाहे शृंगार हो या वीर यह अनुनासिक झंकार **रासो** में अबाध गति से सुनाई पड़ती है। झंकार-स्थिति को ध्वनित करके गुंजा देता है। यह प्रवृत्ति तुलसीदास में भी मिलती है। इसी प्रकार द्वित्व व्यंजनों का प्रयोग प्रधानतः युद्ध वर्णन में और सामान्यतः सर्वत्र मिलता है। **रासो** का कवि अपने समय की काव्य-परंपरा का रस सिद्ध कवि है। उसने स्वयं लिखा है-

रासउ असंभु नव रस सरस छंदु चंद किय अमिय सम।
शृंगार वीर करुन विभच्छ मय अद्‌भुतइ संत सम।।

2.3.3 ध्वनि प्रवाह

चंद की काव्य भाषा में अनुस्वार द्वित्व मिश्र की ध्वनियाँ प्रवाह-अवरोध नहीं करतीं। वे चंद के कुशल हाथों अभूतपूर्व प्रवाह उत्पन्न करती हैं। प्राकृत-अपभ्रंश की काव्य परंपरा में चंद का ध्वनि-प्रवाह अद्वितीय है। ध्वनि-प्रवाह अपभ्रंश के महान कवि स्वयंभु में चंद से कम नहीं किंतु चंद का काव्य-प्रवाह द्वित्व एवं अनुस्वार के साथ गूंजता हुआ गतिशील होता है। चंद चाहे देवी देवताओं की स्तुति करें, युद्ध का वर्णन या नारी-शरीर का सौंदर्य या विनोद - यह अनुस्वार द्वित्व सहित प्रवाह सर्वत्र दिखलाई पड़ता है। वे वर्णानुप्रास के भी सिद्ध कवि हैं। उनके भाव नाद-प्रवाह में रूपांतरित हो जाते हैं- जिसे हमारे साहित्य शास्त्रियों ने शब्दार्थ का सहित त्व कहा है। काव्य के प्रारंभिक अंश में सरस्वती वंदना में स्वर व्यंजनों की मैत्री से उत्पन्न ध्वनि की आवर्त चंद की शैली का ठेठ उदाहरण हैं।

मुलाहार विहार सार सुबुधा अब्धा बुधा गोपिनी
सेतं चीर सरीर नीर गहिरा गोरी गिरा जोगिनी
बीना पानी सुबानि जानि दधिजा हंसा रसा आसिनी
लंबोजा चिहुरार भार जघना बिध्ना घना नासिनी

जरा सा ही विचार करने पर ज्ञात हो जाएगा कि यह प्रवाह चाहे जितना स्वाभाविक लगे, इसके पीछे गहरा लोक-ज्ञान, परंपरा ज्ञान, संवेदना एव अभ्यास है।

'कनवज्ज समय' में युद्ध के इस वर्णन में युद्धमत्त सैनिकों के हथियारों और कोलाहल का निनाद-

बजंत धाय सद्दकं ननद सद्द सुंदर।
गरब्बि देखि अग्गि ज्यों विदोष मन्न जे दुरं।।
उठंत दिष्ट सुर की करूर अंखि राजई।
मनो कि सौकि बीय दिष्ट बंकुरीति साजई।।

चंदवरदाई रूढ़ उपमानों के उपयोग से सौंदर्य वर्णन में शृंगार को अद्‌भुत से पुष्ट भी कर सकते हैं। प्रसंग पृथ्वीराज द्वारा संयोगिता का प्रथम दर्शन है। पृथ्वीराज ने देखा-

कुंजर के ऊपर सिंह। सिंह के ऊपर दो पर्वत। पर्वत पर भौरें। भौरों पर चन्द्रमा। चन्द्रमा के ऊपर एक तोता बैठा है। जिस पर दो हिरण है हिरन पर दो धनुष और धनुष पर कंदर्प

कुंजर उप्पर सिंघ, सिंघ उप्पर दुइ पव्वय।
पव्वय उप्पर भृंग भृंग उप्पर ससि सुभ्भय।।
ससि उप्पर इक कीर कीर उप्पर मृग दिट्‌ठौ।
मृग उप्पर कोवंड संघ कन्द्रप्प वयट्‌ठौ।।

कहने की आवश्यकता नहीं कि ये नख-शिख के रूढ़ उपमान हैं जिन्हें चंद ने अपने ढंग से प्रस्तुत करके अद्‌भुत को शृंगार का सहायक बना दिया है। इसी प्रकार वे यथाअवसर वीभत्स और भय को वीर का सहायक बनाते हैं।

2.4 सारांश

रासो का हिंदी साहित्य के इतिहास में अविस्मरणीय स्थान है। **रासो** अपनी पूर्ववर्ती परधारा और परवर्ती साहित्य-विकास का सेतु है। उसमें पूर्ववर्ती काव्य-प्रवृत्तियों का संधान मिलता है तो परवर्ती प्रवृत्तियों के रूप। **पृथ्वीराज रासो** के महत्व पर प्रकाश डालते हुए डॉ. नामवर सिंह ने ठीक ही कहा है-

> **रासो** मानव जीवन की विविध परिस्थितियों और भाव दशाओं का महासागर है। यही वह विशेषता है जिससे युग के सभी काव्यों में **रासो** को सर्वोपरि स्थान दिया गया है। निश्चय ही यह उस युग की सांस्कृतिक परिस्थितियों तथा पूर्व परम्पराओं का बृहद्‌कोश है और मध्ययुगीन भारतीय समाज का एक काव्यात्मक इतिहास है।

इस इकाई में हमने **पृथ्वीराज रासो** के काव्यत्व पर विचार किया। दो इकाइयों में हमने **पृथ्वीराज रासो** का अध्ययन किया। पहली इकाई में हमने **पृथ्वीराज रासो** की प्रामाणिकता पर विचार किया था। इस संदर्भ में हमने कहा था कि **पृथ्वीराज रासो** का मूल्यांकन एक काव्य-ग्रंथ के रूप में किया जाना चाहिए न कि एक इतिहास-ग्रंथ के रूप में। दूसरी इकाई में **पृथ्वीराज रासो** के काव्यत्व पर विचार करते हुए हमने पाया कि **रासो** एक उत्कृष्ट रचना है। सामंती मूल्यों से ग्रस्त होने के बावजूद इसमें मानवीय क्रिया कलापों का स्वच्छंद, निर्भीक, यथार्थपरक और मार्मिक चित्रण किया गया है।

2.5 अभ्यास/प्रश्न

1. पृथ्वीराज रासो में वर्णित प्रसंगों का उल्लेख कीजिए।
2. कैमास वध में कवि की निर्भीकता किस प्रकार प्रकट हुई है?
3. कनवज्ज समय के षट्-ऋतु वर्णन का क्या महत्व है?
4. चंद को छंद का राजा क्यों कहा जाता है?